KOHLER'S INSIGHY THEORY

कोहलर का सूझ – बूझ या अंतर्दृष्टि का सिद्धांत

:- प्रतिपादक (Propounder) – वर्दीमर (Wertheimer), कोफ्क़ा (Koffka), कोहलर (Kohler)

प्रयोगकर्ता (Experimenter)- कोहलर (Kohler)

प्रयोग किया गया (Experiment on)- वनमानुष/ सुल्तान

सहयोगकर्ता (Collaborator) – कोफ्क़ा (Koffka)

प्रतिपादन (Demonstration) – 1912

सूझ के सिद्धांत का प्रतिपादन गेस्टाल्टवादियों के विचारों पर आधारित है ! गेस्टाल्ट शब्द का अर्थ है- समग्र रूप या पूर्ण आकार अर्थात किसी वस्तु को टुकड़ों में ना देखकर समग्र रूप में देखा जाए ! अतः गेस्टाल्ट सिद्धांत के अनुसार व्यक्ति किसी वस्तु को आंशिक रूप से नहीं अपितु पूर्ण रूप से सीखता है ! वह वस्तु को एक इकाई के रूप में ही देखता है तथा उसके संपूर्ण रूप को ग्रहण कर बाद में उसके विभिन्न भागों पर दृष्टि डालता है ! अर्थात इसके अनुसार व्यक्ति किसी आंशिक रूप से नहीं बल्कि पूर्ण रूप से सीखता है !

इस सिद्धांत का जन्मदाता जर्मनी का मनोवैज्ञानिक वर्दीमर को कहा जाता है ! वर्दीमर का मानना यह है कि -

" संपूर्ण उसके खंडों के योग की अपेक्षा बड़ा है अर्थात "संपूर्ण" बड़ा है और ' कुछ' उसका अंश है!" " The whole is greater than the sum of its parts." इसे हिंदी में पूर्णाकारवाद भी कहा जाता है !

वर्दीमर के सिद्धांत को बढ़ाने में कोफ्क़ा तथा कोहलर ने बहुत योगदान दिया है! अंतर्दृष्टि सिद्धांत की व्याख्या कोहलर ने अपनी पुस्तक 'Gestalt Psychology' 1959 में की है ! सन 1925 में सबसे पहले कोहलर ने सूझ / अंतर्दृष्टि (Insight) शब्द का प्रयोग किया था ! अंतर्दृष्टि का अर्थ है- समस्या के समाधान को गहराई से देखना! गेस्टाल्ट सिद्धांत के अनुसार सीखना प्रयास हुआ त्रुटि ना होकर सूझ के द्वारा होता है ! सूझ का अभिप्राय अचानक उत्पन्न होने वाले ऐसे विचार से है जो किसी का समाधान कर दे ! सूझ द्वारा सीखने के अंतर्गत प्राणी परिस्थितियों का भली प्रकार से अवलोकन करता है तत्पश्चात अपनी प्रतिक्रिया देता है ! सूज द्वारा सीखने के लिए बुद्धि की आवश्यकता होती हैं और इस प्रकार के अधिगम में मस्तिष्क का सर्वाधिक प्रयोग होता है !

अर्थात, सूझ से कोहलर का तात्पर्य इस बात से था कि समस्या का समाधान उद्दीपन अनुक्रिया के धीरे- धीरे बनने से नहीं होता है बल्कि उद्दीपन के बीच के संबंधों को अचानक समझने से होता है !

Definition of Insight Theory

अंतर्दृष्टि की परिभाषा

:- कुछ मनोवैज्ञानिकों ने अंतर्दृष्टि की परिभाषा इस रूप से परिभाषित की है –

1. **वुडवर्थ (Woodworth) के अनुसार –" अंतर्दृष्टि का अर्थ है- अच्छा निरीक्षण, स्थिति को पूर्ण इकाई के रूप में समझना या स्थिति के उन भागों को समझना जो लक्ष्य प्राप्ति का मार्ग दिखाते हैं !"**
2. **गुड(Good) के अनुसार- "सूझ, वास्तविक स्थिति का आकस्मिक, निश्चित और तात्कालिक ज्ञान है !"**
3. **वर्दीमर (Wertheimer) के अनुसार-" समग्रवाद उद्दीपनात्मक परिस्थिति को समझने की विधि है !" " A gestalt is the pattern configuration on form of apprehending a stimulus."**

Experiment of Kohler's Insight Theory

कोहलर का सूझ – बूझ या अंतर्दृष्टि का प्रयोग

:-सूझ या अंतर्दृष्टि का प्रवर्तक उल्फगंग कोहलर (Wolfgang Kohler) है ! कोहलर (1927) ने कई तरह के पशुओं जैसे वनमानुष (Chimpanzees), बन्दर, मुर्गी तथा कुत्ता पर प्रयोग किए हैं परन्तु उनके द्वारा 1913 से 1918 के बीच केनरी द्वीप (Canary Island) में सुल्तान नामक वनमानुष पर किया गया प्रयोग सर्वाधिक प्रचलित हो पाया है !कोहलर के सबसे बुद्धिमान 'वनमानुष' का नाम सुल्तान था ! उनके द्वारा सुल्तान पर किए गये दो प्रयोग विशेष रूप से उल्लेखनीय है जो इस प्रकार है –

1. **छड़ी समस्या पर किया गया प्रयोग (Experiment on stick problem)**
2. **बॉक्स समस्या पर किया गया प्रयोग (Experiment on box problem)**

1. छड़ी समस्या पर किया गया प्रयोग (Experiment on stick problem)

:-| छड़ी समस्या के प्रयोग में सुल्तान नामक वनमानुष को एक बड़े पिंजरे में बंद कर दिया गया था !वनमानुष भूखा था, इसलिए पिंजड़े के बाहर टेबल पर केला रख दिया गया था! पिंजड़े में दो छोटी-छोटी छड़ी भी दाग दी गई थी जिसकी बनावट कुछ ऐसी थी कि वह एक दूसरे से जुड़ जा सकती थी !केले को बाहर रखा देखकर सुल्तान ने अपने हाथ से,फिर पैर से तथा बारी-बारी से दोनों छोरियों के सहारे केले को पिंजरे के अंदर खींच लेने का प्रयास किया, परंतु उसे सफलता नहीं मिली क्योंकि पिंजड़े से केले की दूरी अधिक थी ! निराश होकर उसने पिंजड़े मैं ऊपर से नीचे देखना प्रारंभ कर दिया और अंत में उन दोनों छड़ियों के सहारे खेलना प्रारंभ कर दिया !

इस खेल के सिलसिले में दोनों छड़ी अचानक एक दूसरे से जुड़ गई ! इसके परिणाम स्वरूप वनमानुष में उत्साह और खुशी देखी गई और इस लंबी छड़ी के सहारे बाहर टेबल पर रखे केले को वह खींचकर खा गया ! फिर बाद में इस प्रयोग को दोहराया गया तो

चित्र 13.9 कोहलर द्वारा छड़ी समस्या पर किया गया

सुल्तान ने तुरंत छड़ियों को जोड़कर टेबल पर रखे केले को खींचकर ले लिया और खा गया !

2. बॉक्स समस्या पर किया गया प्रयोग (Experiment on box problem)

:- बॉक्स समस्या का प्रयोग भी सुल्तान पर ही किया गया! सुल्तान को एक बड़े कमरे में बंद कर दिया गया जिसकी छत से केला लटक रहा था ! इस कमरे के एक कोने में तीन बॉक्स भी रख दिए गए थे ! सुल्तान भूखा था इसलिए जब उसकी नजर के लिए पर गई तो उसने केले को उछल कूद कर प्राप्त कर लेना चाहा! पर कई बार ऐसा करने के बाद भी उसे सफलता नहीं मिली क्योंकि अकेला काफी ऊंचाई पर था ! फिर उसका ध्यान कोने में रखे बॉक्स पर गया और उसमें उत्साह और खुशी देखी गई ! उसने झट से एक बॉक्स को उठाया और लटकते केले के ठीक नीचे रखा ¡ इस पर वह उछलकर किला प्राप्त करना चाहा परंतु फिर भी वह असमर्थ रहा ! फिर दूसरे बॉक्स को पहले बॉक्स पर रखा और केला प्राप्त करना चाहा परंतु

असमर्थ रहा !! इसके बाद फिर तीसरे बॉक्स को उन दोनों पक्षों पर रखा और इस बार उसने उछलकर केला प्राप्त कर लिया ! बाद में सुल्तान को इस तरह की प्रयोगात्मक परिस्थिति में रखने पर उसने उछल कूद कम किया और सीधे तीनों बक्सों को एक दूसरे पर रखकर केला प्राप्त कर लिया !

इस प्रकार उपर्युक्त दोनों प्रयोगों को ध्यान में देखने के बाद या स्पष्ट हो जाता है कि सीखना सूझ पर निर्भर करता है! बड़ी समस्या के प्रयोग में जब खेलते - खेलते दोनों सरिया आपस में जुड़ जाती है तो इससे सुल्तान में अचानक सूझ उत्पन्न हो जाती हैं कि इस लंबी छड़ी से बाहर रखे गए केले की दूरी कम हो जाएगी और केला प्राप्त किया जा सकता है! उसी तरह से जब बॉक्स प्रयोग में सुल्तान का ध्यान कमरे में रखे गए बॉक्स पर गया तो अचानक उसमें सूझ उत्पन्न हो गई कि इन बक्सों को एक दूसरे पर रख देने से छत से लटकते केले की दूरी कम हो जाएगी और वह अकेला प्राप्त कर लेगा!

सुल्तान के इन सब कार्यों से सिद्ध हुआ कि उसमें सूझ थी, जिसने उसे अपने लक्ष्यों को प्राप्त

करने में सफलता दी! वनमानुष के समान बालक और व्यक्ति भी सूझ द्वारा सीखते हैं !सूझ का आधार कल्पना है ! जिस व्यक्ति में कल्पना शक्ति जितनी अधिक होती है उसमें सूझ भी उतनी ही अधिक होती है और इसलिए उसे सफलता भी अधिक मिलती है! बड़े-बड़े दार्शनिकों, इंजीनियरों और राजनीतिज्ञों की सफलता का रहस्य उनकी सूझ ही है !

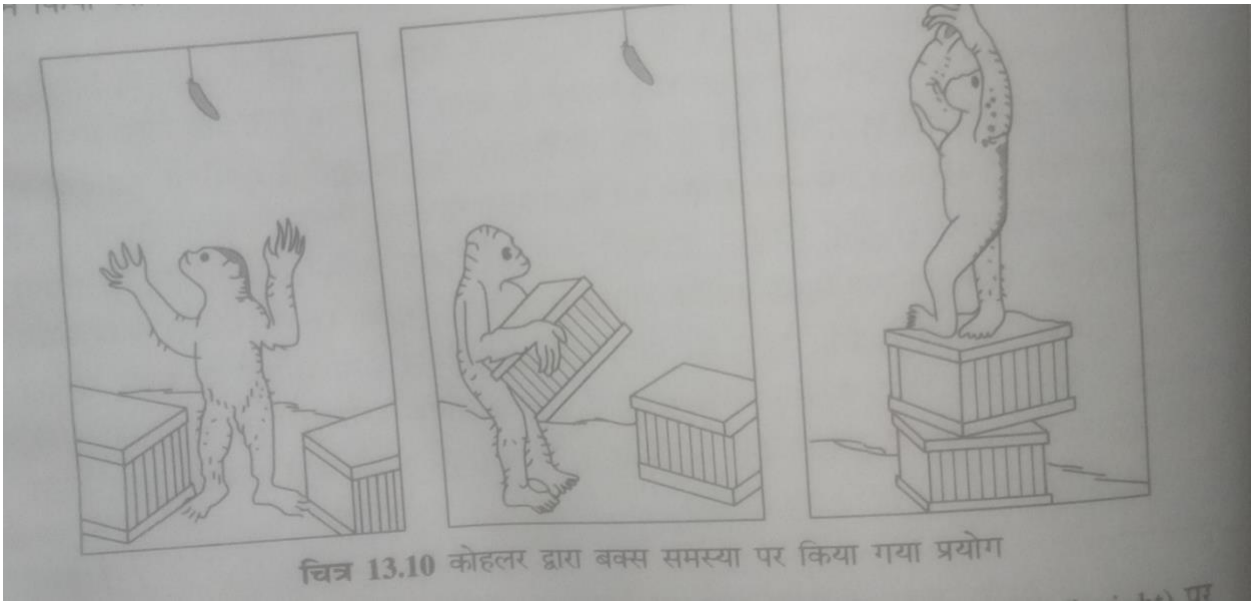

चित्र 13.10 कोहलर द्वारा बक्स समस्या पर किया गया प्रयोग

Educational Implications of Insight Theory

अंतर्दृष्टि सिद्धान्त का शैक्षिक निहितार्थ

:- शिक्षण में इस सिद्धान्त का उपयोग करने के लिए हमें ध्यान रखना चाहिए कि –

1. **इस सिद्धांत के अनुसार सीखने में बच्चों की मानसिक शक्तियों यथा -कल्पना, तर्क, चिंतन तथा संबंध देखने की शक्ति आदि का विकास होता है !**
2. **यह स्थिति यांत्रिक तरीकों से सीखने का खंडन करता है जैसे रटना !**
3. **इस सिद्धांत का उपयोग अंकगणित, रेखा गणित, व्याकरण आदि विषयों की शिक्षा में भली-भांति किया जा सकता है !**
4. **या सिद्धांत छात्रों के सीखने में व्यक्तिगत विविधताओं को महत्व देता है !**
5. **या सिद्धांत छात्रों में अंतर्दृष्टि या सूझ पैदा करने में सहायक होता है !**
6. **यह सिद्धांत छात्रों में सीखने की आवश्यकता पर बल देता है !**

7. यह सिद्धांत किसी समस्या का पूर्ण हाल प्रस्तुत करने में सहायक सिद्ध होता है !
8. यह सिद्धांत विषय वस्तु का समानीकरण करने में सहायक होती है !
9. यह सिद्धांत एक परिस्थिति में सीखे हुए ज्ञान का दूसरी परिस्थिति में स्थानांतरण करने में सहायक होता है!
10. यह सिद्धांत कला, संगीत और साहित्य की शिक्षा में अधिक उपयोगी है!
11. यह सिद्धांत अनुभव के संगठन एवं पूर्णता पर बल देता है !
12. या सिद्धांत किसी समस्या का प्रस्तुतीकरण आंशिक रूप से ना करके बल्कि समग्र रूप से करने पर बल देता है !
13. यह सिद्धांत रचनात्मक कार्यो में अधिक सहायता दे सकता है !
14. यह सिद्धांत छात्रों द्वारा सीखी जाने वाली सामग्री को छात्रों के लिए उद्देश्य पूर्ण तथा छात्रों के अस्तर के अनुकूल बनाए जाने पर बल देता है !

15. इस सिद्धांत से व्यवहारिक समस्याओं का हल प्राप्त किया जा सकता है !

16. छोटे बच्चों के लिए प्रयत्न और भूल द्वारा सीखना उपयुक्त हो सकता है परंतु बड़े बालक जिनका बौद्धिक विकास हो चुका है सूझ द्वारा ही सीखते हैं!

17. सूझ द्वारा सीखी हुई बात में स्थायित्व होता है! अतः शिक्षक को सदैव छात्रों की सूझ को जागृत करने का प्रयत्न करना चाहिए !

18. बच्चों की सूची को जागृत करने के लिए ऐसे प्रश्नों का पूछा जाना आवश्यक है जिनका उत्तर विचार किए बिना दिया ही नहीं जा सके! विचारोत्तेजक प्रश्नों के पूछने के पीछे यही सत्य कार्य करता है !

19. समग्र से अंश की ओर (From whole to Part) तथा सामान्य से जटिल की ओर (From simple to concrete) इन दोनों शिक्षण सूत्रों के पीछे भी यही सिद्धांत कार्य करता है !

20. यह सिद्धांत ज्ञान के उद्देश्य की पूर्ति पर इतना बल नहीं देता जितना कौशल के विकास पर (skill development)

21. बालकों की सूझ को जागृत करने के लिए उन्हें कोई समस्या देकर उसका समाधान उन्हें स्वयं खोजने दीजिए ! जो बालक समाधान नहीं खोज सकें उन्हें उत्प्रेरित कीजिए सहज बढ़ाइए और यदि आवश्यक हो तो थोड़ा सुझाव और संकेत भी दे दीजिए !

22. छोटे बच्चों का मानसिक विकास अधिक नहीं हो पाता! अतः उनके साथ सूझ के सिद्धांत का असफल प्रयास मत कीजिए! उन्हें तो प्रयत्न और उनके द्वारा ही सीखने दीजिए !

23. सूझ बच्चों की आयु, बुद्धि और परिपक्वता पर निर्भर करती है! इसलिए बच्चों के लिए पार्टी सामग्री का निर्माण करते समय उनके बौद्धिक विकास को सामने रखना चाहिए !

24. इस सिद्धांत के अनुसार मनुष्य अपने सामने उपस्थित समस्या को उसके पूर्ण रूप से ग्रहण करते हैं अतः शिक्षकों को बच्चों के सामने किसी भी समस्या को उसके पूर्ण रूप में प्रस्तुत करना चाहिए !

25. यह सिद्धांत सूझ द्वारा सीखने पर बल देता है, शिक्षकों को बच्चों कीआयु, बौद्धिक क्षमता एवं

परिपक्वता को ध्यान में रखकर ही उसके सामने समस्या उपस्थित करनी चाहिए !

26. यह सिद्धांत पूर्ण संत की ओर चलने पर बल देता है! अतः शिक्षकों को शिक्षार्थियों के सामने समस्या को उसके पूर्ण रूप से प्रस्तुत करना चाहिए फिर उसके अंश अंश का ज्ञान कराकर संपूर्ण का ज्ञान कराना चाहिए यह सब ज्ञान वे स्वयं करके स्वयं खोजें एवं प्राप्त करें !

27. यह सिद्धांत इस तथ्य की ओर इंगित करता है कि पढ़ाते समय शिक्षक शिक्षार्थियों को सीखने के लिए तत्पर करें और प्रक्रिया के दौरान समय-समय पर उन्हें प्रोत्साहित करते रहें ताकि उस में जिज्ञासा एवं रुचि जागृत रहे! साथी शिक्षक शिक्षार्थियों को उनके द्वारा अर्जित पूर्व अनुभवों का उपयोग करने की प्रेरणा भी दें !

----------*----------*----------*----------*----------